



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 357]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 30, 2000/आषाढ़ 9, 1922

No. 357]

NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 30, 2000/ASADHA 9, 1922

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 जून, 2000

सं 45/2000-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (एन.टी.)

**सा.का.नि. 575(अ).—** केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क अधिनियम, 1944 [1944 का 1] की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क मूल्यांकन नियम, 1975 का अधिकरण करते हुए, उन बातों के सिवाए जो ऐसे अधिकरण से पूर्व की गई हैं या किए जाने का लोप किया गया है, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् —

1. [1] इन नियमों का संक्षिप्त नाम केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क मूल्यांकन उत्पादशुल्क माल की कीमत निर्धारण नियम, 2000 है ।  
[2] ये 1 जुलाई, 2000 से प्रवृत्त होंगे ।

अध्याय 1

प्रारम्भिक

2. इन नियमों में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—  
[क] “ अधिनियम ” से केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क अधिनियम, 1944 [1944 का 1] अभिप्रेत है,  
[ख] “ सामान्य सव्यवहार मूल्य ” से वह सव्यवहार मूल्य अभिप्रेत है जिस पर माल की अधिकतम संकलित मात्रा बेची जाती है,  
[ग] “ मूल्य ” से अधिनियम की धारा 4 के अधीन मूल्य अभिप्रेत है,  
[घ] इन नियमों में प्रयुक्त शब्दों और पदों के, जो इनमें परिभाषित नहीं हैं किन्तु अधिनियम में परिभाषित हैं, वही अर्थ होंगे जो उनके अधिनियम में है ।

## अध्याय II

## मूल्य का अवधारण

3. अधिनियम की धारा 4 की उपधारा 11 के खंड 1ख के प्रयोजनों के लिए उत्पादशुल्क्य माल का मूल्य इन नियमों के अनुसार अवधारित किया जाएगा ।

4 उत्पादशुल्क्य माल का मूल्य निर्धारिती द्वारा, निर्धारण के अधीन माल के हटाने के समय निकटतम किसी अन्य समय पर परिदान के लिए बेचे गए ऐसे माल के मूल्य पर आधारित होगा तथा यह ऐसे समायोजन, जो आवश्यक हो, के अधीन होगा जो ऐसे माल के और निर्धारण के अधीन उत्पादशुल्क्य माल के परिदान की तारीखों के अंतर के कारण, इस सदर्भ में युक्ति युक्त प्रतीत हो ।

5 जहां कोई उत्पादशुल्क्य माल अधिनियम की धारा 4 की उपधारा 11 के खंड 1क में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में बेचा जाता है, सिवाए इस परिस्थिति के जब उत्पादशुल्क्य माल परिदान के लिए हटाए गए स्थान से भिन्न किसी स्थान पर बेचा जाता है, वहां ऐसे उत्पादशुल्क्य माल का मूल्य संव्यवहार मूल्य समझा जाएगा इसमें से ऐसे उत्पादशुल्क्य माल के हटाने के स्थान से परिदान के स्थान तक परिवहन की वास्तविक लागत को अपवर्जित किया जाएगा परन्तु परिवहन की ऐसी लागत उत्पादशुल्क्य माल के लिए कीमत के साथ केता पर प्रभारित होगी और उसे ऐसे माल के बीजक में पृथक् रूप से दर्शित किया जाएगा ।

6. जहां उत्पाद-शुल्क्य माल अधिनियम की धारा 4 की उपधारा 11 के खंड 1क में विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में बेचा जाता है वहां, सिवाए उस दशा के जब बिक्री के लिये कीमत ही एकमात्र प्रतिफल नहीं है, ऐसे माल का मूल्य ऐसे संव्यवहार मूल्य और निर्धारिती को केता की ओर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिलने वाले किसी अतिरिक्त प्रतिफल के धनीय मूल्य की रकम की कुल राशि समझी जाएगी ।

स्पष्टीकरण:— शंकाओं को दूर करने के लिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि निम्नलिखित माल और सेवाओं का समुचित रूप में प्रभाजित मूल्य, जहां इसकी केता द्वारा बिना किसी प्रभार के प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः आपूर्ति की गई है या कम लागत पर ऐसे माल के उत्पादन या विक्रय के संबंध में उपयोग के लिए आपूर्ति की गई है, उस सीमा तक ऐसा मूल्य वस्तुतः संदत्त कीमत में सम्मिलित नहीं की गई है या सदेय नहीं है, ऐसे अतिरिक्त प्रतिफल के धनीय मूल्य की राशि के रूप में समझा जाएगा जो माल के विक्रय के संबंध में मूल्य के रूप में केता से निर्धारिती को प्रत्यक्षतः प्राप्त हुई है और इसे तदनुसार संकलित किया जाएगा।

ii। सामग्री, सघटको, पुर्जों तथा ऐसे माल में समाविष्ट ऐसे ही मदों का मूल्य,

iii। औजारों, डाईयों, साचो, रेखाचित्रों, ब्लूप्रिंटों, तकनीकी मानचित्रों और चार्टों तथा ऐसे माल के उत्पादन में प्रयुक्त ऐसे ही मदों का मूल्य;

iii। उपयोग की गई सामग्री का मूल्य जिसके अंतर्गत ऐसे माल के उत्पादन में प्रयुक्त पैकेज सामग्री सम्मिलित है,

iv। इंजीनियरी, विकास, कलाकार्य, डिजाइन कार्य और रेंखांकनों तथा रेखाचित्रों का मूल्य, जो उत्पादन कारखाने से भिन्न अन्यत्र किए गए हैं, और जो ऐसे माल के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं ।

7. जहां उत्पाद-शुल्क्य माल निर्धारिती द्वारा हटाए जाने के समय और स्थान पर नहीं बेचा गया है किन्तु किसी परेषण अभिकर्ता के डिपो, परिसर या किसी अन्य स्थान या परिसर 11जिसे इसमें इसके पश्चात् “ ऐसा अन्य स्थान ” कहा गया है। को अंतरित किया जाता है जहां से उत्पादशुल्क्य माल कारखाने से उनकी निकासी के पश्चात् बेचा जाएगा और जहां निर्धारिती और उक्त माल का केता संबंधित नहीं है तथा कीमत विक्रय के लिए एकमात्र प्रतिफल है वहां मूल्य ऐसे अन्य स्थान पर या लगभग उसी समय बेचे गए ऐसे माल का सामान्य संव्यवहार मूल्य होगा और इसके अभाव में निर्धारण के अधीन माल के हटाए जाने के समय के निकटतम समय पर हो ।

8 जहा उत्पादशुल्क्य माल निर्धारिती द्वारा नहीं बेचा जाता है किन्तु उसके द्वारा या उसकी ओर से अन्य वस्तुएँ उत्पादित करने कया विनिर्माण करने में उपभोग के लिए प्रयोग किया जाता है वहां मूल्य ऐसे माल के उत्पादन या विनिर्माण की लागत का एक सौ पन्द्रह प्रतिशत होगा ।

9 जहा उत्पाद-शुल्क्य माल निर्धारिती द्वारा ऐसे व्यक्ति को या उसके माध्यम से संबंधित है

जो अधिनियम धारा 4 की उपधारा 13। के खंड 1ख। के उपखंड iii।, उपखंड iii। या उपखंड iv। में विनिर्दिष्ट रीति में से किसी एक में नहीं बेचा जाता है वहा माल का मूल्य वह सामान्य संव्यवहार मूल्य होगा जिस पर संबंधित व्यक्ति द्वारा इन्हें हटाए जाने के समय केता को 1जो संबंधित व्यक्ति नहीं है। बेचा जाता है या जहां ऐसा माल ऐसे केता को नहीं बेचा जाता है ऐसे केता को 1जो संबंधित व्यक्ति है। बेचा जाता है जो ऐसे माल को फुटकर में बेचता,

परन्तु उस दशा मे जहा संबंधित व्यक्ति माल को नहीं बेचता है किन्तु ऐसे माल को वस्तुओ के उत्पादन या विनिर्माण मे प्रयोग या उपभोग करता है, वहां मूल्य का निर्धारण नियम 8 में विनिर्दिष्ट रीति मे अवधारित किया जाएगा ।

10. जहा निर्धारिती इस प्रकार व्यवस्था करता है कि उत्पादन-शुल्क्य माल उसके द्वारा अतर संबंधित उपक्रम को या उसके माध्यम के सिवाए उसके द्वारा नहीं बेचा जाएगा वहा माल का मूल्य निम्नलिखित रीति में अवधारित किया जाएगा.

1क। यदि उपक्रम इस प्रकार संबंधित हैं कि वे उपखंड iii।, iii।, या iv। के निबधनानुसार भी संबंधित है या केता निर्धारिती की नियंत्री कपनी या समनुषगी कपनी है तो मूल्य नियम 9 मे विहित रीति में अवधारित किया जाएगा ।

स्पष्टीकरण:-इस खंड में “ नियत्री कपनी ” और “ समनुषगी कपनी ” का वही अर्थ है जो कपनी अधिनियम, 1956 11956 का 1। में हैं ।

1ख। किसी अन्य दशा में मूल्य इस प्रकार अवधारित किया जाएगा मानों वे धारा 4 की उपधारा 1। के प्रयोजन के लिए संबंधित व्यक्ति नहीं हैं ।

11 यदि उत्पादन-शुल्क्य माल का मूल्य पूर्वोक्त नियमों के अधीन अवधारित नहीं किया जा सकता तो मूल्य का अवधारण इन नियमों के सिद्धांतों और साधारण उपबंधों और अधिनियम की धारा 4 की उपधारा 1। से सुसंगत युक्तियुक्त स्त्रोतों का उपयोग कर दिया जाएगा ।

**MINISTRY OF FINANCE****(Department of Revenue)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 30th June, 2000

**No. 45/2000-CENTRAL EXCISE (N.T.)**

**G.S.R. 575(E).**— In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excise Act, 1944 (1 of 1944), and in supersession of the Central Excise (Valuation) Rules, 1975 except as respect things done or omitted to be done before such supersession, the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. (1) These rules may be called the Central Excise Valuation (Determination of Price of Excisable Goods) Rules, 2000.
- (2) They shall come into force on and from the 1<sup>st</sup> day of July, 2000.

**CHAPTER I**  
**PRELIMINARY**

2. In these rules, unless the context otherwise requires,—
  - (a) “Act” means the Central Excise Act, 1944(1 of 1944);
  - (b) “normal transaction value” means the transaction value at which the greatest aggregate quantity of goods are sold;
  - (c) “value” means the value referred to in section 4 of the Act;
  - (d) words and expressions used in these rules and not defined but defined in the Act shall have the meanings respectively assigned to them in the Act.

**CHAPTER II**  
**DETERMINATION OF VALUE**

3. The value of any excisable goods shall, for the purposes of clause (b) of sub-section (1) of section 4 of the Act, be determined in accordance with these rules.
4. The value of the excisable goods shall be based on the value of such goods sold by the assessee for delivery at any other time nearest to the time of the removal of goods under assessment, subject, if necessary, to such adjustment on account of the difference in the dates of delivery of such goods and of the excisable goods under assessment, as may appear reasonable.
5. Where any excisable goods are sold in the circumstances specified in clause (a) of sub-section (1) of section 4 of the Act except the circumstance in which the excisable goods are sold for delivery at a place other than the place of removal, then the value of such excisable goods shall be deemed to be the transaction value, excluding the actual cost of transportation from

the place of removal upto the place of delivery of such excisable goods provided the cost of transportation is charged to the buyer in addition to the price for the goods and shown separately in the invoice for such excisable goods.

6. Where the excisable goods are sold in the circumstances specified in clause (a) of sub section (1) of section 4 of the Act except the circumstance where the price is not the sole consideration for sale, the value of such goods shall be deemed to be the aggregate of such transaction value and the amount of money value of any additional consideration flowing directly or indirectly from the buyer to the assessee.

Explanation,- For removal of doubts, it is hereby clarified that the value, apportioned as appropriate, of the following goods and services, whether supplied directly or indirectly by the buyer free of charge or at reduced cost for use in connection with the production and sale of such goods, to the extent that such value has not been included in the price actually paid or payable, shall be treated to be the amount of money value of additional consideration flowing directly or indirectly from the buyer to the assessee in relation to sale of the goods being valued and aggregated accordingly, namely:-

- (i) value of materials, components, parts and similar items relatable to such goods;
  - (ii) value of tools, dies, moulds, drawings, blue prints, technical maps and charts and similar items used in the production of such goods;
  - (iii) value of material consumed, including packaging materials, in the production of such goods;
  - (iv) value of engineering, development, art work, design work and plans and sketches undertaken elsewhere than in the factory of production and necessary for the production of such goods.
7. Where the excisable goods are not sold by the assessee at the time and place of removal but are transferred to a depot, premises of a consignment agent or any other place or premises (hereinafter referred to as "such other place") from where the excisable goods are to be sold after their clearance from the place of removal and where the assessee and the buyer of the said goods are not related and the price is the sole consideration for the sale, the value shall be the normal transaction value of such goods sold from such other place at or about the same time and, where such goods are not sold at or about the same time, at the time nearest to the time of removal of goods under assessment.
  8. Where the excisable goods are not sold by the assessee but are used for consumption by him or on his behalf in the production or manufacture of other articles, the value shall be one hundred and fifteen per cent of the cost of production or manufacture of such goods.
  9. When the assessee so arranges that the excisable goods are not sold by an assessee except to or through a person who is related in the manner specified in either of sub-clauses (ii), (iii) or (iv) of clause (b) of sub-section (3) of section 4 of the Act, the value of the goods shall be the normal transaction value at which these are sold by the related person at the time of removal, to buyers (not being related person); or where such goods are not sold to such buyers, to buyers (being related person), who sells such goods in retail:

Provided that in a case where the related person does not sell the goods but uses or consumes such goods in the production or manufacture of articles, the value shall be determined in the manner specified in rule 8.

1811 G I/2010

10. When the assessee so arranges that the excisable goods are not sold by him except to or through an inter-connected undertaking, the value of goods shall be determined in the following manner, namely:-
- (a) If the undertakings are so connected that they are also related in terms of sub-clause (ii) or (iii) or (iv) of clause (b) of sub-section (3) of Section 4 of the Act or the buyer is a holding company or subsidiary company of the assessee, then the value shall be determined in the manner prescribed in rule 9.
- Explanation,- In this clause “holding company” and “subsidiary company” shall have the same meanings as in the Companies Act, 1956 (1 of 1956).
- (b) in any other case, the value shall be determined as if they are not related persons for the purpose of sub-section (1) of section 4.
11. If the value of any excisable goods cannot be determined under the foregoing rules, the value shall be determined using reasonable means consistent with the principles and general provisions of these rules and sub-section (1) of section 4 of the Act.

[F. No. 354/81/2000-TRU]

T.R. RUSTAGI, Jt. Secy.